

श्री अरविंद का शिक्षा में योगदान

प्रो डा चारु लता सिंह

डीन, वी एस जे एम सी,

विवेकानंद इन्स्टिट्यूट आफ प्रफेशनल स्टूडीस, टी सी, दिल्ली

सारांश

श्री अरविंद का जन्म १५ अगस्त १८७२ को कलकत्ता में हुआ। उनके पिता का नाम श्री कृष्णधन घोष और माता का नाम श्रीमती स्वरणमला देवी था। पिता ने इंग्लैंड से मेडिकल की पढ़ाई की थी और सर्जन थे। १८७९ में डॉक्टर घोष ने श्री अरविंद को पढ़ाई की लिए इंग्लैंड भेज दिया। श्री अरविंद को भारतीय प्रभाव से दूर रखा गया। क्योंकि भारतीय सभ्यता अंग्रेजों के अधीन रुढ़िवादिता से ग्रस्त थी। यद्यपि श्री अरविंद भारतीय परंपरों से दूर रहे ; उन्होंने देश की आज़ादी तथा विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय सभ्यता में प्रखर योगदान किया। उन्होंने ICS की परीक्षा भी दी , परंतु स्वयं घुड़सवारी में न पास कर पाने की वजह से ICS में नहीं गए क्योंकि वह अंग्रेजों के निर्देशों पर काम नहीं करना चाहते थे। श्री अरविंद के जीवन में अलग अलग पड़ाव आए। और वह उन क्षेत्रों में अपना योगदान देते गए। सर्वप्रथम वह साहित्य के प्रति आकर्षित रहे और बहुत सी कविताओं के माध्यम से उनके विचार प्रकट होते हैं जैसे 'लाइज़ टू आयरलैंड', 'कर्मयोगिन', जिनमें देश भक्ति तथा भारतीयता के भाव उजागर होते हैं। महाराजा बडोदा के सानिध्य में उन्होंने भारतीय भाषाओं, इतिहास, सभ्यता व धर्म का ज्ञान प्राप्त किया। भारतीय दर्शन का भी उन्होंने अध्ययन किया। उनका जीवन साहित्यिक, राष्ट्रवादिता, स्वाधीनता तथा अध्यात्म के पड़ावों से गुजरा। इसी बीच उनका शिक्षा में योगदान भुलाया नहीं जा सकता। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति को यदि बचाना है, तो भारत में सही शिक्षा, जो की मूल्य आधारित हो आवश्यक है। सर्वांगीण शिक्षा में पाँच मूल्यों को उन्होंने अनिवार्य बताया: शारीरिक शिक्षा, मूल/ प्राणिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, बौद्धिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक शिक्षा। यह शोध श्री अरविंद के शिक्षा में योगदान तथा उनके द्वारा सुझाए शिक्षा के इन पाँच बिंदुओं पर गहराई से उल्लेख करेगा। बहुत हद तक हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०, श्री अरविंद के विचारों को समावेश करती दिखती है।

मुख्य शब्द : मूल्य, सभ्यता, संस्कृति, अध्ययन, सर्वांगीण शिक्षा ।

I प्रस्तावना

१.जीवन परिचय

श्री अरविंद घोष का जन्म संपन्न तथा शिक्षित परिवार में हुआ। वे शिक्षा के महत्व को भलीभाँति जानते थे। इसीलिए श्री अरविंद को ६ वर्ष की आयु में इंग्लैंड भेजा गया। इंग्लैंड में श्री अरविंद ने पाश्चात्य पढ़ाई की तथा लैटिन, फ्रेंच जर्मन इत्यादि भाषाओं में अध्ययन किया। भारत आने के पश्चात १८९३ में उन्होंने महाराजा गाएकवाड के यहाँ नौकरी की। इसी बीच उन्होंने भारतीय सभ्यता का ज्ञान अर्जित किया तथा संस्कृत भाषा और अन्य कई भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया।

१९०५ में श्री घोष ने बंग भंग आंदोलन में भाग लिया और राजनीति में प्रवेश किया। अपनी रचनाओं को प्रकाशित कर, उन्होंने राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करने का कार्य किया, जिनमें 'करमयोगिन' तथा 'धर्म' प्रमुख हैं। उन्होंने सर्वप्रथम ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध स्वदेशी का आवाहन किया। वह कई बार जेल गए।

जेल के दौरान ही उन्हें ईश्वरीय आत्मा का बोध हुआ और १९१० में वह राजनीति त्याग कर पुदुच्चेरी चले गए। वहाँ उन्होंने अध्यत्मिकता की और अपना योगदान आरम्भ किया। उन्होंने वहाँ आश्रम की स्थापना की, जहाँ योग पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था। सन १९५० में उन्होंने समाधि ले ली। श्री अरविंद का जीवन एक प्रेरणा है, वह अध्यात्म गुरु, दार्शनिक, शिक्षाविद, समाज सेवक व सुधारक के रूप में जाने जाते हैं। औरोबिंदो आश्रम पुदुच्चेरी तथा दिल्ली उनके दिखाए रास्ते पर चलते हुए आज भी समाज सुधार के कार्यों में अग्रसर हैं।

२ दार्शनिक ज्ञान

श्री अरविंद का दार्शनिक ज्ञान अखंड चेतना की प्राप्ति के लिए कार्य करने पर विश्वास रखता है। इस के लिए मनुष्य का सर्वांगीण विकास आवश्यक है। मनुष्य जब हर तरह से जागृत व परिपक्व होगा तभी वह आध्यात्मिक राह पर अग्रसर होगा और परमज्ञान को प्राप्त होगा।

II शोध का उद्देश्य

शोध का उद्देश्य श्री अरविंद की शिक्षा के बारे में गम्भीरता से जानने और सरल भाषा में समझने का है। ताकि इसका अधिकाधिक लाभ सभी को हो।

१ श्री अरविंद की शिक्षा प्रणाली का महत्व

श्री अरविंद का मानना था कि मनुष्य जीवन में शिक्षा का महत्व बहुत अधिक है। शिक्षा विचारों को जन्म देती है और विचार मनुष्य का करम निर्धारित करते हैं। "माता-पिता और शिक्षक

दोनों का काम बच्चे को स्वयं शिक्षित होने में सक्षम बनाना और उसकी मदद करना है, ताकि वह अपनी बौद्धिक, नैतिक, सौंदर्यपरक और व्यावहारिक क्षमताओं का विकास कर सके और एक जैविक प्राणी के रूप में स्वतंत्र रूप से विकसित हो सके, न कि उसे एक निष्क्रिय प्लास्टिक पदार्थ की तरह दबाया और दबाया जाए" - श्री अरविंदो - द ह्यूमन साइकल।

श्री घोष के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक के मन, बुद्धि, चिंतन और ज्ञान से अंतःकरण में विकास कर पाए और उसे आध्यत्म की ओर ले जाए। उनका मानना था की शिक्षा एक स्वतंत्र वातावरण में प्रदान की जानी चाहिए तथा बालक की रुचि के अनुसार होनी चाहिए।

सही शिक्षा ही हमें सही रास्ते पर ले जाते हुए अनंत चेतना की ओर ले जाएगी। कर्मठ बालक, कर्मठ नागरिक ही सही शिक्षा से समाज को योगदान दे सकते हैं। सही जीवन के लिए मस्तिष्क की शक्ति, मानसिक संतुलन तथा नैतिक मूल्य तथा आध्यत्म चिंतन आवश्यक है। मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए शारीरिक, समजिक, नैतिक, बौद्धिक तथा अध्यात्मिक शिक्षा का होना आवश्यक है।

III श्री अरविंद के शिक्षा से सम्बंधित मूल तथ्य

१ शिक्षा सिद्धांत

- शिक्षा मात्र भाषा में होनी चाहिए
- शिक्षा बालक प्रधान होनी चाहिए
- शिक्षा रुचि के अनुसार होनी चाहिए
- शिक्षा बालक की सभी शक्तियों के विकास के लिए होनी चाहिए
- शिक्षा में शारीरिक स्वस्थता पर ध्यान देना चाहिए
- शिक्षा का आधार ब्रह्मचर्य होना चाहिए मात्र
- शिक्षा धर्म तथा मूल आधारित होनी चाहिए
- शिक्षा जन्म से जीवन भर तक होनी चाहिए
- शिक्षा उदाहरण के रूप में सिखाई जानी चाहिए

पाठ्यक्रम तथा विधि ऐसी होनी चाहिए जिसमें बालक स्वयं से ही तथ्यों के प्रति आकर्षित हो और ज्ञान अर्जित करे। वह देख कर व अनुभव कर के शिक्षा ग्रहण करे। शिक्षा केवल सहायक एवं पथ प्रदर्शक होना चाहिए। शिक्षक का काम ज्ञान थोपना नहीं है। बल्कि जिज्ञासा जगाना है। शिक्षक बालक को समस्या का हल न बता कर उसके समाधान के अवसर प्रदान करे। बालक की शिक्षा का मूल्यांकन तथा उन्मूलन भी मौखिक तथा उसके विकास कार्यों से लगाया जाना चाहिए।

२ शिक्षा के स्तर

शिक्षा के स्तर अलग अलग निर्धारित किए जा सकते हैं जैसे :

प्राइमरी: मात्रि भाषा, गणित, अंग्रेज़ी, समाज अध्ययन, विज्ञान चिरतकल संगीत इत्यादि

सेकंडरी: मात्रि भाषा, गणित, फ्रेंच, अंग्रेज़ी, शरीर विज्ञान, भौतिक रासायनिक विज्ञान चित्रकला, संगीत इत्यादि

हाइअर: सभ्यता इतिहास साहित्य, अंतर्राष्ट्रिय सम्बन्ध इत्यादि

वोकेशनल: चित्रकला, बागबानी सिलयी कढ़ायी संगीत कृषि बधयी, इत्यादि

वोकेशनल शिक्षा पर भी श्री औरोबिंदो का खास ध्यान था, क्योंकि वह स्वदेशी के पक्षधर थे और मानते थे कि सभी को आत्म निर्भर बनाना चाहिए।

IV शोध विधि

विभिन्न सन्दर्भों तथा स्रोतों से अर्जित सूचनाओं के ज्ञान पर आधारित; श्री अरविंद के सर्वांगीण शिक्षा के पाँच आयामों का विश्लेषण

1. शारीरिक शिक्षा,
2. मूल /प्राणिक शिक्षा,
3. मानसिक शिक्षा,
4. बौद्धिक शिक्षा तथा
5. आध्यात्मिक शिक्षा।

इकाइयों का निर्धारण: हर आयाम के गहन विश्लेषण व निचोड़ की इकाइयाँ :

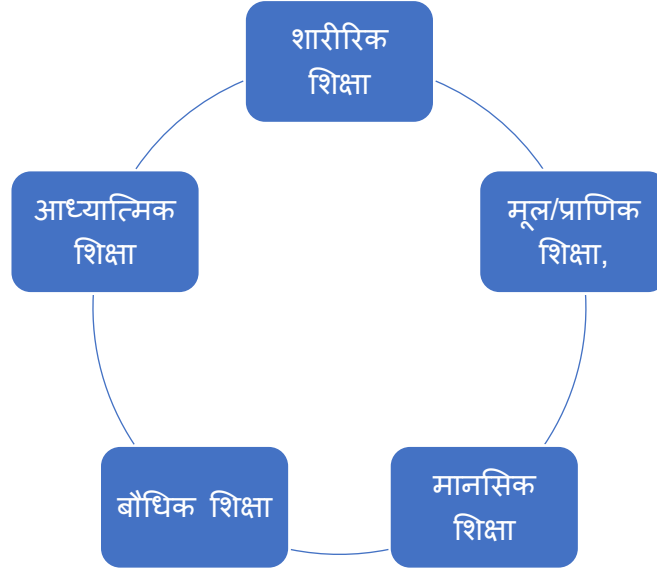
- उद्देश्य
- मूल पहलू
- आवश्यक कार्यान्वित बिंदु

समग्र संधान: सर्वांगीण शिक्षा का सम्पूर्ण विश्लेषण

V सर्वांगीण शिक्षा के पाँच आयामों का विश्लेषण

शिक्षा को पूर्ण होने के लिए मनुष्य की पाँच मुख्य गतिविधियों के अनुरूप पाँच मुख्य पहलू होने चाहिए : शारीरिक शिक्षा, मूल /प्राणिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, बौद्धिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक शिक्षा। इन पाँचों के नियमित ज्ञान से हम भौतिकता में रहते हुए आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। इन पाँचों पर विस्तृत चर्चा की गयी है।

आम तौर पर, शिक्षा के ये चरण व्यक्ति के विकास के कालानुक्रमिक रूप से अनुसरण करते हैं; इसका मतलब यह नहीं है कि उनमें से एक को दूसरे की जगह लेनी चाहिए, बल्कि यह कि सभी को अपने जीवन के अंत तक एक दूसरे को पूरा करते हुए जारी रहना चाहिए।



श्री अरविंद की सर्वांगीण शिक्षा के आयाम

(i) शारीरिक शिक्षा:

मानव चेतना के सभी क्षेत्रों में से, भौतिक क्षेत्र ही सबसे अधिक पूर्ण रूप से विधि, व्यवस्था, अनुशासन, प्रक्रिया द्वारा संचालित होता है। शरीर की सभी शिक्षा, यदि इसे प्रभावी होना है, तो इसे कठोर, विस्तृत, दूरदर्शी और व्यवस्थित होना चाहिए। शरीर आदतों का एक प्राणी है। लेकिन इन आदतों को नियंत्रित और अनुशासित किया जाना चाहिए। शरीर की सारी शिक्षा जन्म से ही शुरू होनी चाहिए और जीवन भर जारी रहनी चाहिए।

शारीरिक शिक्षा के तीन मुख्य पहलू थे:

- (1) शरीर की कार्यप्रणाली पर नियंत्रण और अनुशासन;
- (2) शरीर के सभी भागों और गतिविधियों का समग्र, व्यवस्थित और सामंजस्यपूर्ण विकास;
- (3) किसी भी दोष और विकृति का सुधार।

यदि बच्चा अपने जीवन के शुरू से ही अच्छी आदतें सीखता है, तो इससे उसे जीवन भर बहुत सी परेशानियों और असुविधाओं से छुटकारा मिलेगा। वह स्वयं की देखभाल कर पाएगा, किसी पर निर्भर नहीं होगा।

स्वाभाविक रूप से, यदि इस शिक्षा को तर्कसंगत, प्रबुद्ध और प्रभावी होना है, तो यह मानव शरीर, इसकी संरचना और इसकी कार्यप्रणाली के न्यूनतम ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए। जैसे-जैसे बच्चा विकसित होता है, उसे धीरे-धीरे अपने आंतरिक अंगों की कार्यप्रणाली का निरीक्षण करना सिखाया जाना चाहिए ताकि वह उन पर अधिक से अधिक नियंत्रण कर सके और देख सके कि यह कार्यप्रणाली सामान्य और सामंजस्यपूर्ण बनी रहे। जहाँ तक आसन, मुद्रा और चाल-ढाल का सवाल है, बुरी आदतें बहुत कम उम्र में और बहुत तेज़ी से बनती हैं, और इनका उसके पूरे जीवन पर विनाशकारी परिणाम हो सकता है।

प्रत्येक समस्या हर दूसरे से अलग होती है और समाधान व्यक्तिगत मामले के अनुकूल होना चाहिए। भोजन के बारे में भी का विस्तार से अध्ययन किया गया है; बच्चों के विकास में मदद करने वाला आहार आम तौर पर उनकी प्रवृत्ति के अनुसार होना चाहिए। उसे ऐसे भोजन के प्रति रुचि विकसित करने में मदद करनी चाहिए जो सादा और स्वास्थ्यवर्धक, ठोस और स्वादिष्ट हो, लेकिन किसी भी तरह की बेकार जटिलताओं से मुक्त हो।

बचपन से ही, व्यक्ति को यह पता होना चाहिए कि वह शरीर को शक्ति और स्वास्थ्य देने के लिए खाता है, न कि स्वाद के आनंद का आनंद लेने के लिए। भोजन बच्चे की उम्र और उसकी नियमित गतिविधियों के अनुसार चुना और बांटा जाना चाहिए। इसमें वे सभी रासायनिक और गतिशील तत्व शामिल होने चाहिए जो उसके विकास और शरीर के हर हिस्से के संतुलित विकास के लिए आवश्यक हैं।

स्वच्छता का आनंद लेना और स्वास्थ्यकर आदतें अपनाना भी आवश्यक है। लेकिन, बच्चे से स्वच्छता और स्वच्छता के नियमों के प्रति सम्मान प्राप्त करने में, इस बात का बहुत ध्यान रखना चाहिए कि उसके मन में बीमारी का डर न पैदा हो। डर शिक्षा का सबसे खराब साधन है। किसी भी हालत में इस घातक प्रवृत्ति को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए।

शरीर के सभी अंगों के व्यवस्थित और नियमित विकास के लिए हर दिन कुछ समय समर्पित किया जाना चाहिए। बच्चे की शिक्षा के सामान्य कार्यक्रम में, खेल और आउटडोर खेलों को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए; यह दुनिया की सभी दवाओं से अधिक, बच्चे को अच्छा स्वास्थ्य देगा। धूप में एक घंटे घूमना कमजोरी या यहां तक कि एनीमिया को ठीक करने के लिए किसी डॉक्टर कहीं अधिक लाभप्रद है। छोटी उम्र से ही बच्चों को अच्छे स्वास्थ्य, शारीरिक शक्ति और संतुलन का सम्मान करना सिखाया जाना चाहिए।

शरीर पर सामान्य अवस्था में, जब मानसिक धारणाओं या प्राणिक आवेगों का कोई हस्तक्षेप नहीं होता, तब भी यह भली-भाँति जानता है कि उसके लिए क्या अच्छा और आवश्यक है। लेकिन व्यवहार में इसे प्रभावी बनाने के लिए, बच्चे को सावधानी से शिक्षित करना चाहिए और उसे अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं के बीच अंतर करना सिखाना चाहिए।

१ पहला पटल:

शिक्षा	उद्देश्य	मूल पहलू	आवश्यक कार्यान्वित बिंदु
शारीरिक शिक्षा	<ul style="list-style-type: none">• शारीरिक नियंत्रण, अनुशासन,• शारीरिक कार्य प्रणाली,• शरीर के सभी भागों और गतिविधियों का समग्र, व्यवस्थित और सामंजस्यपूर्ण विकास,• किसी भी शारीरिक दोष और विकृति का सुधार,• सुदृढ़ तथा स्वस्थ शरीर	<ul style="list-style-type: none">• शरीर की सही गतिशीलता• शरीर के लिए सही निर्देश व नियम• सभी अंगों का विकास• सभी अंगों का परस्पर समन्वय व सामंजस्य• बल का विकास• लचीलापन, स्फूर्ति, एकाग्रता• विकारों को दूर करना	<ul style="list-style-type: none">• सही आसन• सही तथा सीधा और गठीला शरीर• व्यायाम,• योग• सही निद्रा• आराम• शारीरिक स्वच्छता• सही भोजन• समय का सदुपयोग• विकृतियों से दूर रहना• उच्च विचार

(ii) मूल/प्राणिक शिक्षा:

सभी शिक्षाओं में से, मूल/ प्राण शिक्षा शायद सबसे महत्वपूर्ण, सबसे अपरिहार्य है। फिर भी इसे शायद ही कभी विवेक और विधि के साथ अपनाया जाता है। मनुष्य के स्वभाव में प्राण एक निरंकुश शासक है। प्राण हमें शक्ति, ऊर्जा, उत्साह, प्रभावी बनने की गतिशीलता देता है। सफल होने के लिए व्यक्ति में अंतहीन धीरज और दृढ़ता तथा ऐसी इच्छाशक्ति होनी चाहिए जिसे कोई भी असफलता कमजोर न कर सके। प्राण पर ही जीवन निर्भर है। यह ऊर्जा का स्रोत है। यही हमारी इच्छाओं और चाहतों को नियंत्रित करता है। जब मूल निश्चल होगा, पवित्र होगा वही हमें शारीरिक लाभ भी देगा और सुख का अनुभव कराएगा।

मनुष्य का अस्तित्व आनंद पर आधारित है और अस्तित्व के आनंद के बिना कोई जीवन नहीं। अस्तित्व का यह आनंद, ईश्वर का गुण भी है। इसीलिए जीवन में आनंद की खोज

अथवा वर्तमान विश्व में जीवन का लक्ष्य व्यक्तिगत सुख प्राप्त करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को क्रमशः सत्य-चेतना के प्रति जागृत करना है।

चरित्र में हमें अवचेतन पर लगभग पूर्ण नियंत्रण तथा अचेतन से जो कुछ भी आता है, उस पर बहुत कठोर अनुशासन की आवश्यकता होती है। श्री अरविंद के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति में बहुत हद तक, और असाधारण व्यक्ति में सटीकता की बढ़ती डिग्री में, चरित्र की दो विपरीत प्रवृत्तियाँ, लगभग समान अनुपात में होती हैं, जो एक ही चीज़ की रोशनी और छाया की तरह होती हैं। इस प्रकार जो व्यक्ति असाधारण रूप से उदार होने की क्षमता रखता है, वह अचानक अपने स्वभाव में एक जिद्दी लालच को बढ़ता हुआ पाएगा; साहसी व्यक्ति अपने अस्तित्व के किसी हिस्से में कायर होगा और अच्छे व्यक्ति में अचानक दुष्ट आवेग होंगे। इस तरह से जीवन प्रत्येक व्यक्ति को न केवल एक आदर्श व्यक्त करने की संभावना प्रदान करता है, बल्कि विपरीत तत्वों के साथ ठोस तरीके से उस लड़ाई का प्रतिनिधित्व भी करता है, जिसे उसे लड़ना है और उस जीत को हासिल करना है जो उसे साकार होने के लिए संभव बनाती है।

इस तरह से व्यक्ति का चरित्र प्रकृति की सनक और भौतिक और प्राणिक जीवन के नियतिवाद के अनुसार क्रिस्टलीकृत होगा, जब तक कि समय के साथ एक उच्च तत्व नहीं आता, यह सचेत इच्छा ही वह है जिसे हम शिक्षा की एक तर्कसंगत पद्धति समझते हैं। गलत और सही का निर्णय कर पाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए बच्चे की महत्वपूर्ण शिक्षा जल्द से जल्द शुरू होनी चाहिए। वह अपनी इंद्रियों का सही उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए। इस तरह कई बुरी आदतों से बचा जा सकता है और कई हानिकारक प्रभावों को समाप्त किया जा सकता है।

इस महत्वपूर्ण शिक्षा के दो मुख्य पहलू हैं, पहला इंद्रियों के विकास और उपयोग से संबंधित दूसरा चरित्र के प्रति जागरूकता और नियंत्रण। इंद्रियों की शिक्षा के भी कई पहलू हैं, जो व्यक्ति के बढ़ने के साथ-साथ एक-दूसरे से जुड़ते जाते हैं; वास्तव में इसे कभी बंद नहीं होना चाहिए। अगर इंद्रियों को सही तरीके से विकसित किया जाए, तो वे सामान्य रूप से उनसे अपेक्षित सटीकता और कार्य करने की शक्ति प्राप्त करती हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य की तरह ही मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य भी होता है, शरीर और उसकी गतिविधियों की तरह संवेदनाओं का भी सौंदर्य और सामंजस्य होता है। कलात्मक स्वाद, सुंदर, स्वस्थ और महान चीज़ों को देखना, उनकी सराहना करना और उनसे प्रेम करना चाहिए, चाहे वे प्रकृति में हों या मानव रचना में। यह एक सच्ची सौंदर्यबोध संस्कृति होनी चाहिए, जो मनुष्य को अपमानजनक प्रभावों से बचाती है।

एक बढ़ती हुई अश्लीलता मानव जीवन को व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों तरह से ग्रस्त कर समाप्ति की ओर ले जाती है। ये सभ्यता के और सामाजिक पतन का संकेत है। सौंदर्यबोध और इंद्रियों के जीवन से संबंधित मामलों में, इन्द्रियों का व्यवस्थित और प्रबुद्ध विकास, मनुष्य को अश्लील, सामान्य और असभ्य व्यवहार से दूर रखता है। सही शिक्षा व्यक्ति में एक कुलीनता और उदारता लाती है जो उसके व्यवहार में स्वतः ही अभिव्यक्त होती है और उसे कई नीच और विकृत हरकतों से बचाती है।

अपने अंदर की विभिन्न गतिविधियों के प्रति सचेत होना और यह जानना कि हम क्या करते हैं और क्यों करते हैं, यह अपरिहार्य प्रारंभिक बिंदु है। बच्चे को निरीक्षण करना, अपनी प्रतिक्रियाओं और आवेगों और उनके कारणों पर ध्यान देना, अपनी इच्छाओं, हिंसा और जुनून की गतिविधियों को समझना आवश्यक है।

इस प्रक्रिया के उपयोगी होने के लिए, अवलोकन की शक्ति के विकास के साथ-साथ प्रगति और पूर्णता की इच्छा भी विकसित होनी चाहिए। यह इच्छा बच्चे में तब ही डाली जानी चाहिए जब वह इच्छाशक्ति रखने में सक्षम हो। इस इच्छाशक्ति को जगाने के लिए, तर्कसंगत तर्क, गरिमामय और आत्म-सम्मान और ईमानदारी के उदाहरण बताना व दिखाना आवश्यक है। इच्छाशक्ति को उसी तरह विकसित किया जा सकता है जैसे मांसपेशियों को व्यवस्थित और प्रगतिशील व्यायाम से शरीर को विकसित किया जा सकता है। प्रयास से आपकी इच्छाशक्ति मजबूत होती है और आप विवेक के साथ लक्ष्य को चुन कर आगे बढ़ते रहते हैं। आपने जो करने का फैसला किया है, आपको उसे करना ही होगा, चाहे इसके लिए आपको कितनी भी कीमत चुकानी पड़े, भले ही आपको इसे करने के लिए कितनी भी बार अपना प्रयास दोहराना पड़े।

व्यक्ति को अपने चरित्र निर्माण का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और फिर अपनी गतिविधियों पर नियंत्रण प्राप्त करना चाहिए ताकि अपने ऊपर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो सके और उन सभी तत्वों का रूपांतरण हो सके जिन्हें रूपांतरित किया जाना है। प्रयास का मूल्य और उसका परिणाम आदर्श के मूल्य पर निर्भर करेगा।

२ दूसरा पटल:

शिक्षा	उद्देश्य	मूल पहलू	आवश्यक कार्यान्वित बिंदु
मूल शिक्षा	<ul style="list-style-type: none"> जीवन की ऊर्जा बनाए रखना प्राण शक्ति, ऊर्जा, उत्साह कायम रखना, प्रभावी बनना गतिशील जीवन जीना इंद्रियों पर संयम बरतना अस्तित्व का आनंद लेना चरित्र निर्माण सही मन तथा कार्यों से शरीर की सुंदरता को महसूस करना प्रकृति को निहारना समझना तथा सौंदर्यबोध से कार्य करना 	मूल गुणों का विकास: <ul style="list-style-type: none"> सत्य ईमानदारी साहस दृढ़ निश्चय नम्रता बढ़ते रहने की इच्छा समवेदनशीलता प्रेम ध्यानपूर्णता एकाग्रता करुणा सराहना चरित्र निर्माण 	<ul style="list-style-type: none"> चरित्र निर्माण पर ध्यान सहमति से काम करना चित्रकला नृत्य संगीत खेल सहकार्य सही कथा कहानिया सुनना और देखना सही उदाहरणों का अनुकरण इंद्रियों पर नियंत्रण अपने मूल्यों पर अडिग रहना हमेशा सही और गलत का विचार करना और सही मार्ग चुनना

(iii) मानसिक शिक्षा:

मानसिक शिक्षा सबसे व्यापक रूप से जानी जाती है और प्रचलित है। शिक्षा मानव मस्तिष्क की क्षमता को बढ़ाने वाली होनी चाहिए। एक अच्छी मानसिक शिक्षा, मनुष्य को उच्च जीवन के लिए तैयार करती है। आम तौर पर पाँच चरण एक के बाद एक आते हैं, लेकिन असाधारण व्यक्तियों में ये बारी-बारी से या एक साथ भी आगे बढ़ सकते हैं। ये पाँच चरण हैं:

(1) एकाग्रता की शक्ति, ध्यान की क्षमता का विकास।

(2) विस्तार, जटिलता एवं समृद्धि की क्षमताओं का विकास।

(3) अपने विचारों को एक केन्द्रीय विचार, एक उच्च आदर्श या एक सर्वोच्च प्रकाशमान विचार के इर्द-गिर्द संगठित करना जो जीवन में मार्गदर्शक का काम करे।

(4) विचार-नियंत्रण, अवांछनीय विचारों का त्याग, केवल वही सोचने में सक्षम बनना जो हम चाहते हैं और जब हम चाहते हैं।

(5) मानसिक शांति, पूर्ण शांति तथा सत्ता के उच्चतर क्षेत्रों से आने वाली प्रेरणाओं के प्रति अधिकाधिक पूर्ण ग्रहणशीलता का विकास।

निरंतर प्रयास और हाथ में लिए गए काम में अधिक से अधिक पूरी तरह से तल्लीन होने की क्षमता बनाने में मानसिक शिक्षा सहायक होती है। उदाहरणतया, खेल से लेकर पुरस्कार तक ध्यान इस क्षमता को विकसित करने वाले सभी तरीकों के बारे में सिखाता है। यह मनोवैज्ञानिक क्रिया है जो सबसे महत्वपूर्ण है। सबसे महत्वपूर्ण है कि आप जो सीखना या सिखाना चाहते हैं, उसमें रुचि जगाना, काम के लिए प्यार और प्रगति की इच्छा। सीखने के लिए प्यार करना सबसे कीमती उपहार है। तभी जीवन की सभी परिस्थितियाँ, सभी घटनाएँ लगातार और हमेशा, और अधिक सीखने के लिए नए अवसर बनाती है ।

इसके लिए ध्यान और एकाग्रता के साथ-साथ अवलोकन, सटीक रिकॉर्डिंग और स्मृति की विश्वसनीयता को भी जोड़ना चाहिए। अवलोकन की यह क्षमता विभिन्न और सहज अभ्यासों द्वारा विकसित की जा सकती है, जिससे बच्चे के विचार को जागृत, सतर्क और तत्पर रखने के लिए हर अवसर का उपयोग किया जा सके। समझ के विकास पर स्मृति की तुलना में बहुत अधिक जोर दिया जाना चाहिए। व्यक्ति केवल वही अच्छी तरह जानता है जो उसने समझा है। कंठस्थ की गई बातें, यंत्रवत्, धीरे-धीरे फीकी पड़ जाती हैं और अंततः गायब हो जाती हैं; जो समझ में आ जाता है, वह कभी नहीं भूलता। बच्चों के 'कैसे और क्यों' प्रश्न समझाने से कभी इनकार नहीं करना चाहिए। इससे बच्चे में उत्तरोत्तर सच्चे अध्ययन के लिए रुचि और जानने के लिए लगातार प्रयास करने की आदत जगती है । कल्पना, रचनात्मक मानसिक क्षमता को विकसित करती है, और इसके माध्यम से अध्ययन जीवंत हो जाता है और मस्तिष्क आनंद में विकसित होता है।

एक ही विषय को विभिन्न तरीकों से समझा जा सकता है, ताकि उस पर विभिन्न विचार सामने आएँ। सोच को समृद्ध और अधिक लचीला बनाना और उसे अधिक जटिल और व्यापक संश्लेषण के लिए तैयार करना चाहिए ।

मानसिक संश्लेषण के केंद्रीय विचार के चुनाव के बारे में भी बहुत सावधानी बरतनी चाहिए; केंद्रीय विचार जितना ऊँचा और बड़ा होगा तथा समय और स्थान से ऊपर उठकर जितना अधिक सार्वभौमिक होगा, विचार, धारणाएँ और सोच उतनी ही अधिक संख्या में और अधिक

जटिल होंगी, जिन्हें मनुष्य व्यवस्थित और सुसंगत करने में सक्षम होगा। समग्रता सामंजस्यपूर्ण और व्यवस्थित बनी रहनी चाहिए। मन की रचनात्मक क्रिया पर नियंत्रण आत्म-शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

जहाँ तक अध्ययन का सवाल है, सभी विचार स्वीकार्य हैं और उन्हें संश्लेषण में शामिल किया जाना चाहिए, जिसका मूल कार्य अधिकाधिक समृद्ध और जटिल बनना है; लेकिन जहाँ तक क्रिया का सवाल है, यह बिल्कुल विपरीत है। जो विचार क्रिया में रूपान्तरित होने के लिए स्वीकार किए जाते हैं, उन पर सख्ती से नियंत्रण किया जाना चाहिए और मस्तिष्क द्वारा केवल उन्हीं को क्रिया में अभिव्यक्त होने की अनुमति दी जानी चाहिए जो मानसिक संश्लेषण का आधार बनाने वाले केंद्रीय विचार की सामान्य प्रवृत्ति से सहमत है। इसका मतलब यह है, कि मानसिक चेतना में प्रवेश करने वाले प्रत्येक विचार को केंद्रीय विचार से पहले रखा जाना चाहिए; यदि उसे पहले से समूहीकृत विचारों के बीच कोई तार्किक स्थान मिलता है, तो उसे संश्लेषण में स्वीकार किया जाना चाहिए; यदि नहीं, तो उसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए, ताकि वह क्रिया पर कोई प्रभाव न डाल सके। अपने कार्यों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने के लिए मानसिक शुद्धि का यह कार्य बहुत नियमित रूप से किया जाना चाहिए।

इस उद्देश्य के लिए, प्रतिदिन कुछ समय अलग रखना चाहिए। जब कोई व्यक्ति शांतिपूर्वक अपने विचारों पर विचार कर सके और अपने संश्लेषण को व्यवस्थित कर सके। एक बार आदत पड़ जाने पर, काम और क्रिया के दौरान भी अपने विचारों पर नियंत्रण किया जा सकता है। विशेष रूप से, एकाग्रता और ध्यान की शक्ति को विकसित करना ज़रूरी है। लगभग पूर्ण मौन प्राप्त कर व्यक्ति धीरे-धीरे मन के उच्चतर क्षेत्रों की ओर खुल जाता है और वहां से आने वाली प्रेरणाओं को ग्रहण कर सकता है।

सच तो यह है कि मनुष्य के अन्य अंगों की तरह मन को भी आराम की आवश्यकता होती है और जब तक हम यह नहीं जानते कि मन को आराम कैसे दिया जाए, तब तक उसे आराम नहीं मिलेगा। अपनी मानसिक गतिविधि को बदलना निश्चित रूप से आराम का तरीका है; लेकिन सबसे बड़ा संभव आराम मौन है।

जब कोई व्यक्ति अपनी इच्छानुसार मन को शांत कर, उसे एकाग्र ग्रहणशील मौन में लाना सीख जाता है, तब वह हर समस्या का समाधान ढूँढ लेता है। एक सचेत शांति में, प्रकाश स्वयं प्रकट हो जाता है तथा मनुष्य की क्षमता के लिए नए क्षितिज खोल देता है।

३ तीसरा पटल :

शिक्षा	उद्देश्य	मूल पहलू	आवश्यक कार्यान्वित बिंदु
मानसिक शिक्षा	<ul style="list-style-type: none"> मस्तिष्क द्वारा सूचनाओं को संजोना तथा ग्रहण करना उन्हें कार्यान्वित करना चीजों को समझना व उनका सही अनुकरण करना मान की शांति पाना गहरायी में जा कर हर चीज़ का विश्लेषण करना व अपनाना अच्छे कामों से प्रभावित होना व अपनाना 	<ul style="list-style-type: none"> एकाग्रता का विकास मस्तिष्क की क्षमता को बढ़ाना विचारों का समन्वय व विश्लेषण मस्तिष्क तथा सोच पर नियंत्रण अच्छी चीजों के ग्रहण के लिए तत्पतरता एवं इच्छा शांत मन स्थिर मन जीवन तथा जीवत्व की पहचान और ज्ञान स्वयं को समझना व जानना हर चीज़ का अध्ययन सभी कार्यों में उत्सुकता तथा एकाग्रता से विचार विमर्श तथा हल। विचारों को केंद्रित करना 	<ul style="list-style-type: none"> जानना व पहचानना हर चीज़ की ओर ध्यान देना व उसे समझना विश्लेषण करना स्वयं का मूल्यांकन तर्क ढूँढना किसी भी सवाल का उपाय सोचना और निवारण करना सही व्यवस्था तथा प्रणाली से परिणाम तक पहुँचना सहकार्य करना यदाश्त को बढ़ाना नए नए उपयोग करना एकाग्रता को बढ़ाना काल्पनिक शक्ति को विकसित करना, तर्क शक्ति को बढ़ाना शीघ्र विचार व निश्चय करना संश्लेषण करना खुली सोच रखना

(iv) बौद्धिक शिक्षा:

यह शिक्षा अपने अंदर उस आत्मा और परमात्मा की अनुभूति की है। यह हमारे जीवन में दैवीय शक्ति के प्रवाह को अनुभव करवाती है। जो अंदर भी है और बाहर भी। यही वह शक्ति है, जो हमें पहले की तीन शिक्षाओं का ज्ञान देती है। यह शिक्षा व शक्ति मानसिक कार्यों को वश में कर काम करवाती है। ये दैवीय शक्ति हमारे मन, शरीर और जीवन को चलाती है।

इसके बोध से ही मनुष्य संसार में रहते हुए भी मन के अधीन नहीं होता। निष्काम भाव से कार्य करता है और किसी कार्य में आसक्त नहीं होता। वह देवत्व के अधीन होता है। वह प्रभु में सामने के लिए आसक्त रहता है और सभी कार्य उसके समझ कर करता है, क्योंकि उसको बोध होता है सच का तथा माया का। वह माया जाल से निकलना चाहता है।

पहली तीन शिक्षाएँ हमारी बाहरी प्रवृत्तियों के बारे में हमें जागरूक करती हैं। शिक्षा की तीन धाराएँ - शारीरिक, प्राणिक और मानसिक व्यक्तित्व के निर्माण, व्यक्ति को अनाकार अवचेतन द्रव्यमान से ऊपर उठाने और उसे एक सुपरिभाषित आत्म-चेतन इकाई बनाने के साधन के रूप में परिभाषित करती हैं।

बौद्धिक शिक्षा हमें अंतरज्ञान की ओर ले जाती है। अपने भीतर वह खोजने के लिए उकसाती है, जो शरीर और जीवन की परिस्थितियों से स्वतंत्र है। यह अपने अस्तित्व की गहराई, भीतर की सार्वभौमिकता, असीम विस्तार, अखंड सातत्य की भावना को जगाती है। यह मनुष्य को विकेन्द्रित, विस्तारित और व्यापक बनाती है। मनुष्य को अहंकार की बाधाओं, बाह्य व्यक्तित्व की दीवारों, प्रतिक्रियाओं की नपुंसकता और इच्छाशक्ति की अक्षमता से परे ले जाने में मदद करती है। ये मनुष्य को शांति और प्रगति के पथ पर ले जाती है।

प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक महान चेतना छिपी है जो उसके वर्तमान जीवन की सीमाओं से परे जाती है और उसे एक उच्चतर तथा विशाल जीवन में भाग लेने में सक्षम बनाती है। प्राणी को इस चेतना से अनभिज्ञ नहीं रहना चाहिए। यह एक प्रकाश की तरह है जो अस्तित्व के केंद्र में चमकता है, बाहरी चेतना के मोटे आवरणों को चीरता हुआ प्रगट होता है।

४ चौथा पटल :

शिक्षा	उद्देश्य	मूल पहलू	आवश्यक कार्यान्वित बिंदु
बौद्धिक शिक्षा	असलियत को समझना माया के जाल में न फँसना जीवन के उद्देश्य को पहचानना आत्म ज्ञान की प्राप्ति तत्त्व ज्ञान को समझना सत्य को जानना	<ul style="list-style-type: none">परम सत्य सबके अंदर हैइसे अंदर ही खोजनासंसार सच से चलता हैअंत में सच में ही समावेशित होता है।	<ul style="list-style-type: none">एकाग्रता,एक बिंदु होनाअंतरमुख होनासत्य में लीन रहनासमाधिबौद्धिक शक्ति का विकास

(v) आध्यात्मिक शिक्षा:

ऊपर जिन शिक्षाओं का उल्लेख किया है, वह सत्ता की आरोही गति के अनुसार नीचे से ऊपर की ओर बढ़ती हैं, उनके विपरीत आध्यात्मिक शिक्षा ऊपर से नीचे की ओर बढ़ेगी, इसका प्रभाव एक सत्ता से दूसरी सत्ता तक फैलता जाएगा जब तक कि अंततः भौतिक सत्ता तक नहीं पहुंच जाता। यह अंतिम परिवर्तन केवल तभी प्रत्यक्ष रूप से घटित होगा जब सत्ता की आंतरिक अवस्थाएँ पहले से ही काफी हद तक रूपांतरित हो चुकी हों।

आध्यात्मिक चेतना का अर्थ है अनंत और शाश्वत जीवन जीना, सभी सृष्टि से परे, समय और स्थान से परे प्रक्षेपित होना। ईश्वरीय शाश्वत सिद्धांत के प्रति समर्पण, यह खोज एक रहस्यवादी भावना, एक धार्मिक जीवन से भी जुड़ी होती है। यह मुख्य रूप से धर्म ही है। इसे अवश्य ही शिक्षा के लिए आधार के रूप में काम में लाया जाना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मन आध्यात्मिक चीजों का आकलन करने में असमर्थ है। इस विषय पर लिखने वाले सभी लोगों ने ऐसा कहा है। इस चैत्य की उपस्थिति के माध्यम से ही व्यक्ति को सत्य ज्ञान की प्राप्ति होती है और इसके लिए एक महान दृढ़ संकल्प, एक दृढ़ इच्छाशक्ति और एक अथक दृढ़ता आवश्यक है।

आध्यात्मिक शिक्षा में प्रत्येक अभिव्यक्ति में सत्य का एक तत्व निहित है। उसे पाने का सबसे प्रभावी प्रारंभिक बिंदु तथा सबसे तेज़ तरीका है, 'पूर्ण आत्म-समर्पण', यह ईश्वरीय धारणा का शिखर है, इस से बड़ा कोई आनंद नहीं। इस स्थिति में जाने पर एक क्षण आता है, मनुष्य सब अवधारणाओं से परे निकल जाता है, और एक ऐसे अनुभव पर पहुंचता है, जो सभी वर्णनो से परे है। आत्म-समर्पण से परिपूर्ण और समग्र मनुष्य, तीव्र और सहज प्रेम से 'उस' एक में विलीन हो जाता है। यही पूर्ण शिक्षा का लक्ष्य है।

श्री अरविंद के अनुसार, "आध्यात्मिक शिक्षा का परिणाम मानव प्रकृति का क्रमिक निर्माण और उसकी सुप्त क्षमताओं का बढ़ता हुआ विकास नहीं होगा, बल्कि स्वयं प्रकृति का रूपान्तरण है, सत्ता का सम्पूर्ण रूपान्तरण होगा, मनुष्य से ऊपर और परे की प्रजाति का अतिमानव की ओर एक नया आरोहण होगा, जो अन्त में पृथ्वी पर एक दिव्य जाति के आविर्भाव की ओर ले जायेगा"। यह समस्त पार्थिव अभिव्यक्ति से, समस्त ब्रह्मांड से परे अव्यक्त की ओर मनुष्य की वापसी है। यही शिक्षा हमें मुक्ति की ओर ले जाती है।

५ पाँचवाँ पटल :

शिक्षा	उद्देश्य	मूल पहलू	आवश्यक कार्यान्वित बिंदु
आध्यात्मिक शिक्षा	सच को जानना व पहचानना 'उस' में विलीन होना	<ul style="list-style-type: none"> स्वस्थ शरीर, सही व्यवहार स्वच्छ मन उज्ज्वल विचार आध्यतम ज्ञान 	<ul style="list-style-type: none"> निरंतर प्रयास ध्यान लगाना अपने अंतर में जाना प्रकाश को पाना

निराकार में विलय ही वह परम मुक्ति है। आंतरिक अन्वेषण में खोजे गए चमत्कारों को महसूस करना साधारण मानव के लिए अकल्पनीय है। आध्यात्मिक शिक्षा से सभी सीमाओं के पार से एक नई शक्ति और चेतना को उभारा जा सकता है। अव्यक्त को व्यक्त किया जा सकता है। आध्यात्मिक शिक्षा मनुष्य को पूर्णता की ओर बढ़ाती है।

सम्पूर्ण विश्लेषण पटल:

शिक्षा	उद्देश्य	मूल पहलू	आवश्यक कार्यान्वित बिंदु
सर्वांगीण शिक्षा	सम्पूर्ण शिक्षा	<ul style="list-style-type: none"> नियमित शारीरिक शिक्षा अधिकारित तथा मूल शिक्षा साफ़, आज़ाद तथा स्वच्छ मन सक्रिय बौद्धिक स्तर विकास की और अग्रसर रहने की चेष्टा आत्म समर्पण निश्चल प्रेम परम मुक्ति पाना 	<ul style="list-style-type: none"> एकाग्र विचार सच को पाने की उत्सुकता, चेतना व निरंतर प्रयास पूर्ण शिक्षा, सम्पूर्ण जीवन निर्विवाद ईश्वर का प्रभुत्व स्वीकारना मुक्ति पाने का प्रयास

श्री विष्णु पुराण में कहा गया है 'ततकर्म यं बंदाए सा विद्या या विमुक्तए, आयासायपरम करम विद्यान्या शिल्पनाइपुनम', अर्थात् 'करम वही जो बंधन में न बांधे, विद्या वही जो मुक्त करे', 'सा विद्या या विमुक्ताया' अन्य सभी करम निरर्थक है अथवा केवल कारीगिरी मात्र हैं। श्री अरविंद की शिक्षा मनुष्य को अपूर्णता से पूर्णता की ओर ले जाती है।

निष्कर्ष

सच्ची शिक्षा यही है कि कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता। शिक्षक कोई प्रशिक्षक या कार्य-प्रबंधक नहीं है, वह तो केवल सहायक और मार्गदर्शक है। उसका काम सुझाव देना है, थोपना नहीं। वह वास्तव में शिष्य के मन को प्रशिक्षित नहीं करता, वह केवल उसे यह बताता है कि अपने ज्ञान के साधनों को कैसे पूर्ण किया जाए। वह उसे यह बताता है, कि अपने लिए ज्ञान कैसे अर्जित किया जाए। श्री अरविंद का कहना था कि, 'मनुष्य को उसे स्वयं ही अपने स्वभाव के अनुसार विकसित होने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए'।

सही शिक्षा के लिए सही उदाहरण देना भी बहुत आवश्यक है। इस के लिए माता पिता गुरु तथा अग्रज लोगों को बच्चों के सामने अपना सही उदाहरण रखना चाहिए, क्योंकि बच्चे बड़ों का अनुसरण करते हैं। साथ ही ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सरलता, साहस, निस्वार्थता, निःस्वार्थता, धैर्य, धीरज, दृढ़ता, शांति, संयम, आत्म-नियंत्रण ये सभी मूल्य उदाहरण द्वारा बेहतर तरीके से सिखाये जा सकते हैं। कहानी का माध्यम भी किसी सैद्धांतिक व्याख्या से कहीं अधिक शिक्षा दे जाता है। डर शिक्षा का एक घातक साधन है, यह हमेशा धोखे और झूठ को जन्म देता है। इससे बच्चे को बचना चाहिए। प्रकृति को अपने धर्म को त्यागने के लिए मजबूर करना उसे स्थायी नुकसान पहुंचाना, उसके विकास को विकृत करना और उसकी पूर्णता को खराब करना है।

जीवन प्रत्येक व्यक्ति को दिव्यता, पूर्णता और मुक्ति का एक मौका है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा को उसके भीतर से सर्वोत्तम को बाहर निकालने में सहायता करना तथा उसे श्रेष्ठ उपयोग के लिए पूर्ण बनाना है।

अतीत हमारा आधार है, वर्तमान हमारी सामग्री है, भविष्य हमारा लक्ष्य और शिखर है। श्री अरविंद के द्वारा सुझाई गयी सर्वांगीण शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण व सम्पूर्ण है। उनकी शिक्षा एक बालक के जन्म से लेकर जीवन पर्यंत तक की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०, श्री अरविंद की शिक्षा के लगभग सभी आयामों को प्रतिबिम्बित करती है।

संदर्भ सूची

- दास, एच एच(१९८८), इंदीयन पोलतिकल ट्रडिशंज़, स्टर्लिंग पब्लिशेरस, नई दिल्ली
- श्री अरबिंदो,(१९४९), द ह्यूमन साइकल , (इडिशन २०१८), श्री अरवबिंदो आश्रम, पुद्दचेरी, इसबन नो 9789352101580
- द मदर, (१९५४), टिप्पणियाँ ,जून, प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा शिक्षा केंद्र को प्रस्तुत, श्री औरोबिंदो ब्रांच, दिल्ली
- http://www.sriaurobindoinsitute.org/saioc/educational/integral_education
- <https://track2training.com/2025/05/21/contribution-to-education-by-sri-aurobindo-ghosh/>

=====